पर्याय

- प्रवृति,
- चेष्टा,
- क्रिया,
- कर्म,
- यत्न(प्रयत्न),
- कार्य

कर्म

- व्युत्पत्ति

क्रि विक्षेपे धातु में मनिन् प्रत्यय लगकर कर्मन् शब्द्

- निरुक्ति

क्रियते इति कर्म

कर्म के लक्षण

- एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागष्वनपेक्षकारणमिति कर्म लक्षणम्। (वैशेषिक दर्शन)

लक्षण

- संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्|
  कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते ||

(च.सू.१/५२)

कर्म के भेद

- १.लौकिक कर्म- वैशेषिक दर्शन के अनुसार
  - (अ.) उत्क्षेपण
  - (आ.) अपक्षेपण
  - (इ.) आकुञ्चन
  - (ई.) प्रसारण
  - (उ.) गमन
- २.आध्यात्मिक कर्म

आयुर्वेद में कर्म

- पंचकर्म(वमन,विरेचन,निरुह वस्ति,अनुवासन वस्ति,शिरोविरेचन)
- त्रिविध कर्म(पूर्व,प्रधान,पश्चात कर्म)
- पूर्वजन्म कर्म,
- दिनचर्या कर्म
- ऋतुचर्या कर्म
- सद् वृत कर्म आदि

गुण व कर्म मे साधर्म्य

- दोनों पदार्थ
- दोनों द्रव्य के आश्रयी
- दोनों गुण रहित
- दोनों स्वतंत्र अस्तित्व नहीं
- द्रव्य की विशेषता के लिए दोनो का समान महत्व

गुण व कर्म मे वैधर्म्य

गुण	कर्म
गुण चेष्टा रहित होता है	कर्म चेष्टावान होता है
संयोग विभाग में स्वतंत्र कारण नहीं	संयोग विभाग में स्वतंत्र कारण
गुण की उत्पति पहले होती है	गुण के पश्चात कर्म उत्पति होती है
गुण में कर्ता,करण की आवश्यकता नहीं होती है।	कर्म कर्ता,करण की आवश्यकता होती है।
गुण मूर्त और अमूर्त दोनों द्रव्यों में रहता है।	कर्म मूर्त द्रव्यों में रहता है।

Thank You